

Neki Ki Dawat Kaise Den ? (Hindi)

इसका मूल्य : 90

Weekly Booklet : 30

अपनी अपने मुसलमानों को आपकी दावत "नेकी की दावत" को सच बताने

काव्य

# नेकी

## की दावत कैसे दें ?

संस्करण 18



नेकी की दावत में नाकी ज़रूरी है 03

खाली धरना 12

लगावी या इतिहासी बर्तमान का परिणाम 06

सुरी बातों में रोखते रहना.....! 14

लेखक: इतिहास, अपनी अपने मुसल, बर्तमान के इतिहास, इतिहास इतिहास के इतिहास

मुहम्मद इलियास अत्तार कादिरी रज़वी

www.ilmuhalal.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ ط  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून “नेकी की दा'वत” के सफ़ह 497 ता 510 से लिया गया है।

## नेकी की दा'वत कैसे दें ?

**दुआए अत्तार :** या रब्बल मुस्तफा ! जो कोई 15 सफ़हात का रिसाला : “नेकी की दा'वत कैसे दें ?” पढ़ या सुन ले उस को नर्म मिज़ाज और मीठे बोल बोलने वाला बना और उसे वालीदैन समेत बे हिसाब बख़्शा दे ।  
امين بجا خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जिस ने मुझ पर सौ 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शोहदा के साथ रखेगा ।” (مجمع الزوائد، 10/253، حديث: 17298)

صَلُّوا عَلٰى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

**नेकी की दा'वत का तारिक हुज़ूर** عَلَيْهِ السَّلَام **के तरीके पर नहीं**

हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरदारे मक्काए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इर्शाद है : **يا'नी** لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا وَيُوقِرْ كَبِيرَنَا وَيَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ : **है** वोह हम में से नहीं जो हमारे छोटों पर र्हूम न करे और बड़ों की इज़्ज़त न करे और **नेकी का हुक्म** न दे और बुराई से मन्अ न करे । (ترمذی، 370/3، حديث: 1928)

## नेकी की दा'वत सिर्फ़ उ़लमा पर नहीं अ़वाम पर भी लाज़िम है

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَضِيَ اللهُ عَنْهُ इस हदीसे पाक के अल्फ़ाज़ “नेकी का हुक्म न दे और बुराई से मन्अ न करे” के तहत फ़रमाते हैं : हर शख़्स अपनी ताक़त और अपने इल्म के मुताबिक़ दीनी अहक़ाम लोगों में जारी करे। येह सिर्फ़ उ़लमा का ही फ़र्ज़ नहीं सब पर लाज़िम है, हाकिम हाथ से बुराइयां रोके, अ़लिम अ़ाम ज़बानी तब्लीग़ से येह फ़र्ज़ अन्जाम दे। फ़ी ज़माना इस से बहुत ग़फ़लत है।

(मिरआतुल मनाज़ीह, 6/416)

मैं नेकी की दा'वत की धूमें मचाऊं तू कर ऐसा जज़्बा अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

### आ'राबी ने जब मस्जिद में पेशाब कर दिया.....

हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हम नूर के पैकर के साथ मस्जिद में मौजूद थे कि एक आ'राबी (या'नी देहाती) आया और मस्जिद में खड़े हो कर पेशाब करना शुरू कर दिया। जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अस्हाब رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ ने उसे पुकारा : “ठहरो!” आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया कि इसे न रोको छोड़ दो। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ख़ामोश हो गए हत्ता कि उस ने पेशाब कर लिया। फिर मुबल्लिगे आ'ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उसे बुला कर (नरमी व शफ़क़त) से फ़रमाया : “येह मसाजिद पेशाब और गन्दगी के लिये नहीं” येह तो सिर्फ़ अल्लाह पाक के ज़िक़्र, नमाज़ और तिलावते कुरआन के लिये हैं। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने किसी को पानी लाने का हुक्म दिया, वोह पानी

का डोल लाया और उस (या'नी पेशाब की जगह) पर बहा दिया ।

(मुस्लिम, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000)

## नेकी की दा'वत में नरमी जरूरी है

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि (नजिस या'नी नापाक) ज़मीन अगर्चे सूख कर पाक हो जाती है (जब कि उस से नजासत के असरात जाइल हो जाएं) लेकिन ज़मीन का धोना बहुत ही बेहतर है कि इस से गन्दगी का रंग व बू भी जल्दी जाता रहता है और इस से तयम्मूम भी जाइज़ हो जाता है । इस हदीस (में पानी का डोल बहाने के तज़िकरे) से येह लाज़िम नहीं आता कि नापाक ज़मीन बिगैर धोए पाक नहीं हो सकती नीज़ मस्जिद में पाकी के इलावा सफ़ाई भी चाहिये और येह धुलने से ही हासिल होती है । मज़ीद फ़रमाते हैं : इस में मुबल्लिग़ीन को तरीक़ए तब्लीग़ की ता'लीम है कि तब्लीग़ अख़लाक़ और नरमी से होनी चाहिये । (मिरआतुल मनाजीह, 1/ 326)

## पेशाब करते करते अचानक रुक जाने के तिब्बी नुक़सानात

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** जब कोई पेशाब कर रहा हो उस को चौंका देने वाली आवाज़ लगाने और डराने से बचना चाहिये क्यूं कि पेशाब करते करते किसी ख़ौफ़ वगैरा के सबब अधूरा पेशाब फ़ौरन रोक देने से तिब्बी तौर पर इतने सख़्त नुक़सानात पहुंच सकते हैं जितने सांप के डसने से भी नहीं हो सकते ! पेशाब अधूरा छोड़ देने की वजह से जुनून (या'नी पागल पन और बेहोशी के दौर पड़ने) और गुर्दों की मोहलिक बीमारियां हो सकती हैं ।

## खड़े खड़े पेशाब करना सुन्नत नहीं

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा रिवायत में खड़े खड़े पेशाब करने का तज़िकरा है, इस ज़िम्न में अर्ज़ है कि खड़े खड़े पेशाब करना

सुन्नत नहीं है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अव्वल (1250 सफ़हात) सफ़हा 407 पर है : तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : जो शख़्स तुम से येह कहे कि नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खड़े हो कर पेशाब करते थे तो तुम उसे सच्चा न जानो, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नहीं पेशाब फ़रमाते मगर बैठ कर । (ترمذی، 1/90، حدیث: 12)

### खड़े खड़े पेशाब करने के नुक़सानात

**अफ़सोस !** आज कल खड़े खड़े पेशाब करने का आ़म रवाज हो चुका है बिल खुसूस मतार (AIR PORT) और दीगर ख़ास ख़ास मक़ामात पर खड़े हो कर पेशाब करने का मख़सूस इन्तिज़ाम होता है । इस तरह पेशाब करने से जहां सुन्नत फ़ौत होती है वहां इस के तिब्बी नुक़सानात भी हैं चुनान्चे तिब्बी तहक़ीक़ के मुताबिक़ खड़े खड़े पेशाब करने से मसाने का गुदूद मुतवर्रिम हो कर (या'नी सूज कर) बढ़ जाता है जिस के बाइस पेशाब तकलीफ़ से आने, धार पतली होने, क़तरा क़तरा आने बल्कि पेशाब बन्द हो जाने के अमराज़ पैदा हो सकते हैं । खड़े खड़े पेशाब करने वाले बा'ज़ लोग बिगैर धोए या बे खुश्क किये पैन्ट का बटन या जन्जीर बन्द कर लेते हैं जिस से उन की रानों वगैरा पर पेशाब के छींटे गिरते हैं, इस तरह बिला उज़्र बदन को नापाक करने वाले गुनाहगार होने के साथ साथ तिब्बन भी नुक़सान में पड़ सकते हैं एक मुस्तशरिक़् (या'नी ऐसा फ़िरंगी (युरोपियन फ़र्द) जो मशरिक्की ज़बानों मसलन उर्दू वगैरा का माहिर हो) डॉक्टर जौन्ट मिलन (Dr. Jaunt Milen) कहता है : सुरीनों (या'नी बदन का वोह हिस्सा जो बैठने में ज़मीन पर लगता है वोह) और उस के अतराफ़ की एलर्जी, रानों की

खुजली और फुड़ियों, पेड़ू (या'नी नाफ़ के नीचे के हिस्से) की खाल उधड़ने की बीमारी, पर्दे की मख़सूस जगह के ज़ख़म के मरीज़ जब मेरे पास आते हैं तो उन में अक्सर वोही होते हैं जो पेशाब के छींटों से नहीं बचते ।

### पेशाब के छींटों से न बचने का अज़ाब

हज़रते अबी बकरह رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम, صلی الله علیه وآله وسلم के साथ चल रहा था और आप صلی الله علیه وآله وسلم ने मेरा हाथ थामा हुवा था । एक आदमी आप صلی الله علیه وآله وسلم के बाईं तरफ़ था । दर्री अस्ना हम ने अपने सामने दो क़ब्रें पाईं तो महबूबे खुदाए तव्वाब, नुबुव्वत के आप़ताब, जनाबे रिसालत मआब صلی الله علیه وآله وسلم ने फ़रमाया : इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े अम्र की वजह से नहीं हो रहा, तुम में से कौन है जो मुझे एक टहनी ला दे । हम ने एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की तो मैं सब्क़त ले गया और एक टहनी (या'नी शाख़) ले कर हाज़िरे ख़िदमत हो गया । आप صلی الله علیه وآله وسلم ने उस के दो टुकड़े कर दिये और दोनों क़ब्रों पर एक एक रख दिया फिर इर्शाद फ़रमाया : यह जब तक तर रहेंगे इन पर अज़ाब में कमी रहेगी और इन दोनों को ग़ीबत और पेशाब की वजह से अज़ाब हो रहा है । (مسند امام احمد، 7/304، حدیث: 20395)

### आका صلی الله علیه وآله وسلم को इल्मे ग़ैब है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ग़ीबतों और पेशाब के छींटों से न बचना क़ब्र के अज़ाब के अस्बाब में से है । आह ! हमारा वोह नाजुक बदन जो कि मा'मूली कांटे की चुभन, दोपहर की धूप की तपिश व जलन और बुख़ार की मा'मूली सी अगन बरदाशत नहीं कर सकता वोह क़ब्र का हौलनाक अज़ाब कैसे सह सकेगा । या अल्लाह पाक ! हम पेशाब

की आलूदगियों के जुर्मों, गीबतों, चुग़लियों और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से तौबा करते हैं, प्यारे प्यारे मालिक ! हम से हमेशा हमेशा कि लिये राज़ी हो जा और हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमा ।

अमिन بچا لا خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم  
 बयान कर्दा रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आका **इल्मे ग़ैब** है जभी तो ब अताए खुदाए वहहाब क़ब्र का अज़ाब मुलाहज़ा फ़रमा लिया जैसा कि बयान कर्दा हदीसे पाक से ज़ाहिर है । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हदाइके बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

**मुश्किल अल्फ़ाज़ के मअानी : सरे अर्श :** अर्श के ऊपर । **मलकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह । **इयां :** ज़ाहिर ।

**शर्हे कलामे रज़ा :** या रसूलल्लाह **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** अर्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के पेशे नज़र है । दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर ज़ाहिर न हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

**शराबी पर इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा**

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** “नरमी” से जो काम होता है वोह “गरमी” से नहीं हुवा करता और मुबल्लिग़ को तो “मोम” से ज़ियादा नर्म और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा रहना चाहिये, डांट डपट और झाड़ झपट करने से किसी की इस्लाह होनी मुश्किल है । हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद

बिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ “एहयाउल उलूम” में नक़ल करते हैं : हज़रते मुहम्मद बिन ज़करिय्या رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक बार मैं हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन आइशा رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास हाज़िर हुवा, आप रमाज़े मग़रिब के बा'द मस्जिद से घर की जानिब रवाना हुए, रास्ते में एक कुरैशी नौ जवान नशे में धुत नज़र आया, उस ने एक औरत को पकड़ लिया, औरत चिल्लाई, लोग लपके और उस नौ जवान पर टूट पड़े, हज़रते इब्ने आइशा رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उसे पहचाना और लोगों से छुड़ा कर शफ़क़त के साथ सीने से लगा लिया, अपने घर लाए और उसे सुला दिया। जब वोह जागा तो उस का नशा उतर चुका था। उसे नशे के दौरान होने वाले बे ह्याई के क़िस्से और पिटाई का मा'लूम हुवा तो मारे शर्म के रो पड़ा और जाने लगा। हज़रते इब्ने आइशा رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने उस को रोका और निहायत नरमी के साथ नेकी की दा'वत दी और एहसास दिलाया कि बेटा ! आप तो कुरैशी हैं ! आप की ख़ानदानी शराफ़त मरहबा ! येह तो ग़ौर फ़रमाइये कि आप किस अज़ीम हस्ती की औलाद हैं ! बेटा ! अल्लाह पाक से डरिये और हमेशा के लिये शराब नोशी और दीगर गुनाहों से तौबा कर लीजिये। वोह नौ जवान इस प्यार भरी नेकी की दा'वत से पानी पानी हो गया और उस ने रो रो कर तौबा की। शराब और दीगर गुनाहों के क़रीब न जाने का अहद किया। आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ ने शफ़क़त से उस का माथा चूमा और ख़ूब हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई। वोह बेहद मुतअस्सिर हुवा और आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की सोहबत में रहने लगा और अहादीसे मुबारका लिखने पर मामूर हुवा। (احياء العلوم، 2/411 مؤخرًا)

है फ़लाहो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में डूब सकती ही नहीं मौजों की तुयानी में जिस की क़रती हो मुहम्मद की निगहबानी में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



## मैं ने उसे क़त्ल कर के खुदकुशी कर लेनी थी

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** गुनाहों से पीछा छुड़ाने, नमाज़ की पाबन्दी का ज़ेहन बनाने, मक्की मदनी आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नतें अपनाने, दिल में इश्क़े रसूल की शम्अ जलाने, जन्नतुल फ़िरदौस में जगह पाने और अज़ाबे नार से खुद को बचाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये और नेक आ'माल के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये। आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है। एक मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान एक मस्जिद में नमाज़े जुमुआ से क़ब्ल सुन्नतों भरा बयान करने की सआदत हासिल हुई, बयान के इख़िताम पर मस्जिद में मौजूद इस्लामी भाइयों को उन की पेश आमदा परेशानियों के लिये रूहानी इलाज हासिल करने की तरगीब दी। एक साहिब नमाज़े अ़स् के वक़्त उन के पास तशरीफ़ लाए और अपना मस्अला कुछ इन अल्फ़ाज़ में बयान किया : उन्हें असें क़ब्ल मैं रोज़गार के सिल्लिसले में अपने मुल्क से बाहर गए तो वहां जा कर चोरी, डाका ज़नी जैसे जराइम और दूसरे ग़ैर क़ानूनी कामों में मुलव्वस हो गए जब कि अपने मुल्क में मेरी ग़ैर मौजूदगी में घर पर येह क़ियामत टूटी कि किसी ने मेरे बच्चों की अम्मी पर ग़लत व बे बुन्याद इल्ज़ामात आइद कर दिये जिस का नतीजा उस की खुदकुशी की सूरत में ज़ाहिर हुवा। जब उन्हें इस सानिहे की ख़बर दी गई तो वोह सदमे से पागल हो गए और फ़ौरी तौर पर अपने गांव आ पहुंचा। नफ़्सो शैतान के बहकावे में आ कर उन्होंने ने अपनी अहलिया पर ग़लत तोहमत लगाने वाले को क़त्ल कर के खुद भी खुदकुशी कर लेने का इरादा कर लिया। उन्होंने ने इस वारिदात के लवाज़िमात

भी मुकम्मल कर लिये थे लेकिन इस मस्जिद में नमाज़े जुमुआ अदा करने के साथ साथ आप का बयान सुनने की सआदत भी नसीब हुई, बयान के इख़िताम पर आप ने मुश्किलात के हल के लिये “शो'बा रूहानी इलाज” से राबिता करने की जो तरगीब दी उस से ढारस बंधी। बयान सुन कर मेरे उन के गुनाहों भरे इरादे मुतजलज़ल हो गए और उन्होंने ने येह फैसला किया है कि आप से अपना मस्अला बयान कर के कोई ऐसी सूरत इख़ितयार की जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। उस की बातें सुन कर पहले तो वोह घबराए लेकिन फिर **अल्लाह पाक व रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को याद कर के मौक़अ की मुनासबत से मुआमले को हल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के सुन्नतों भरे तहरीरी बयानात के तीन रसाइल “गुस्से का इलाज, अफ़वो दर गुज़र की फ़ज़ीलत और खुदकुशी का इलाज” से रहनुमाई लेते हुए तक्रीबन एक घन्टे तक उन पर इन्फ़रादी कोशिश करते रहे। आख़िरे कार वोह इस्लामी भाई अपने ख़तरनाक इरादे से बाज़ आ गए और यूं दो क़ीमती जानें जाएअ होने से महफूज़ हो गई उन्होंने ने अश्कबार आंखों से तौबा की और मअ ना बालिग़ बच्चों के ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मुरीद हो गए, घर की हिफ़ाज़त और कारोबार में बरकत के लिये “ता'वीज़ाते अत्तारिय्या” भी हासिल किये। जब मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी उन्हें मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की रूबत दिलाई तो पुरनम आंखों के साथ भर्राई हुई आवाज़ में कहा : “إِنْ شَاءَ اللهُ” अब तो मेरी तमाम ज़िन्दगी दा'वते इस्लामी के दीनी कामों ही में गुज़रेगी।”

ऐ इस्लामी भाई न करना लड़ाई कि हो जाएगा बदनुमा दीनी माहोल  
संवर जाएगी आख़िरत إِنْ شَاءَ اللهُ तुम अपनाए रखवो सदा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शाश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

## मुबल्लिगीन जुमुआ को बयान किया करें

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** इस मदनी बहार से जुमुआ के सुन्नतों भरे बयान की बरकतें मा'लूम हुई, दा'वते इस्लामी के तमाम जिम्मेदारान को चाहिये कि जहां जहां मुम्किन हो जुमुआ में बदल बदल कर मुबल्लिगीन के सुन्नतों भरे बयानात की तरकीब फ़रमाया करें क्यूं कि नमाज़े जुमुआ में आने वाले कई अफ़राद ऐसे होते हैं जो उमूमन किसी भी इज्तिमाअ में शिर्कत नहीं करते, इस तरह ऐसों तक भी दा'वते इस्लामी का दीनी पैग़ाम पहुंच जाएगा और कई खुश नसीबों का दिल चोट खा जाएगा और **وَسَاءَ اللَّهُ** वोह गुनाहों से ताइब हो कर पांच वक़्त के नमाज़ी बन जाएंगे और उन पर आप की मज़ीद इन्फ़रादी कोशिश **وَسَاءَ اللَّهُ** उन्हें मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना कर दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता कर के सुन्नतों के सांचे में ढाल देगी। जैसा कि अभी आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि मुआशरे का बिगड़ा हुवा ज़िन्दगी से बेज़ार शख़्स मुबल्लिगे दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयान और इन्फ़रादी कोशिश की बरकत से क़त्ले मुस्लिम से बाज़ रह कर और खुदकुशी का इरादा तर्क कर के ताइब हो गया।

## हर दो मिनट में तीन खुद कुशियां

**अफ़सोस !** आज कल “खुदकुशी” कुछ ज़ियादा ही आ़म हो गई है, इस का एक बहुत बड़ा सबब इल्मे दीन से दूरी है, दाढ़ी मुन्डों, या ज़ब्बाती मॉडर्न बे रीश लड़कों, स्कूल व कॉलेज के त़ालिबे इल्मों, दुन्यवी ता'लीम याफ़्तों या बे पर्दा व फ़ैशन एबल औरतों में ही खुदकुशी का मैलान देखा जा रहा है। आप ने कभी नहीं सुना होगा कि फुलां दीनी त़ालिबे इल्म या आ़लिमे दीन या मुफ़ती साहिब या शरीअत की पाबन्द पर्दा नशीन नेक

बीबी ने खुदकुशी कर ली। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 472 सफ़हात की किताब, “बयानाते अत्तारिया (हिस्सए दुवुम)” सफ़हा 404 ता 406 पर है : गुनाहों की कसरत और अहवाले आख़िरत के मुआमले में जहालत के सबब अफ़सोस ! हमारे वतने अज़ीज़ में खुदकुशी का रूज़्हान बढ़ता ही चला जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक़ दुन्या में हर 40 सेकन्ड में खुदकुशी की एक वारदात होती है !

### क्या खुदकुशी से जान छूट जाती है ?

**ख़ुदकुशी** करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! हालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इज़्ज़त की सूरत में निहायत बुरी तरह फंस जाती है। खुदा की क़सम ! **ख़ुदकुशी** का अज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

### आग में अज़ाब

**हदीसे पाक** में है : जो शख्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अज़ाब** दिया जाएगा।

(بخاری، 4/289، حدیث: 6652)

### उसी हथियार से अज़ाब

**हज़रते साबित बिन ज़ह्हाक** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि इब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से **ख़ुदकुशी** की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से अज़ाब दिया जाएगा।

(بخاری، 1/459، حدیث: 1363)

### गला घोंटने का अज़ाब

**हज़रते अबू हुरैरा** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मरवी, सरकारे दो आलम

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की आग में अपना गला घोंटता रहेगा और जिस ने खुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में खुद को नेज़ा मारता रहेगा ।

(بخاری، 1/460، حدیث: 1365)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

## ख़ाली थैला

मुसल्मानो के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो दिल अच्छाई को अच्छाई न समझे और बुराई को बुराई तस्लीम न करे तो उस के ऊपर वाले हिस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थैले को उल्टा किया जाता है और फिर थैले के अन्दर की चीज़ें बिखर जाती हैं ।

(مصنف ابن أبي شيبة، 8/667، رقم: 124)

## दिल के “अन्धे” और “औंधे” होने के मा'ना

**प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** वाकेई इस में बरबादी ही बरबादी है कि आदमी का दिल अच्छाई को अच्छाई और बुराई को बुराई मानने ही से इन्कार कर दे । हमें गुनाहों से हमेशा बचना और अल्लाह पाक से क़ल्बे सलीम (या'नी सहीह व सलामत दिल) त़लब करना चाहिये, वरना अभी आप ने दिल की तबाही के **मुतअल्लिक़** मौला अली رَضِيَ اللهُ عَنْهُ का इर्शाद मुलाहज़ा फ़रमाया । याद रखिये ! गुनाहों की कसरत के सबब पहले दिल “अन्धा” होता और फिर “औंधा” या'नी उल्टा हो जाता है जो कि आख़िरत के लिये इन्तिहाई तबाह कुन है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” (561 सफ़हात) सफ़हा 405 पर है : तीन चीज़ें अ़लाहदा अ़लाहदा हैं, नफ़्स, रूह, क़ल्ब

(या'नी दिल)। रूह ब मन्ज़िलए बादशाह के है और नफ़्स व क़ल्ब इस के दो वज़ीर हैं। नफ़्स इस को हमेशा शर की तरफ़ ले जाता है और क़ल्ब जब तक साफ़ है ख़ैर की तरफ़ बुलाता है और **مَعَادُ اللَّهِ** कस्रते मआसी (या'नी गुनाहों की ज़ियादती) और खुसूसन कस्रते बिदआत से “अन्धा” कर दिया जाता है। अब उस में हक़ के देखने, समझने ग़ौर करने की क़ाबिलियत नहीं रहती मगर अभी हक़ सुनने की इस्ति'दाद (या'नी क़ाबिलियत) बाक़ी रहती है और फिर **مَعَادُ اللَّهِ** “औंधा” कर दिया जाता है। अब वोह न हक़ सुन सकता है और न देख सकता है, बिल्कुल चौपट (या'नी वीरान) हो कर रह जाता है। (फिर आ'ला हज़रत **رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ** ने फ़रमाया :) **क़ल्ब** (या'नी दिल) हक़ीक़तन उस **مُज़्ग़ए** गोश्त (या'नी गोश्त के लोथड़े) का नाम नहीं बल्कि वोह एक “**लतीफ़ए ग़ैबिय्या**” है जिस का मर्कज़ येह **मुज़्ग़ए** गोश्त (या'नी दिल) है सीने के बाईं (या'नी उल्टी) जानिब और नफ़्स का मर्कज़ ज़ेरे नाफ़ (या'नी नाफ़ के नीचे) है इसी वासिते शाफ़ेइय्या (या'नी शाफ़ेई हज़रत) सीने पर हाथ बांधते हैं कि “नफ़्स” से जो वसाविस उठें वोह “क़ल्ब” तक न पहुंचने पाएं और **हनफ़िय्या** (या'नी हनफ़ी हज़रत) ज़ेरे नाफ़ बांधते हैं।

तौफ़ीक़ नेकियों की ऐ रब्बे करीम दे बदियों से बचने वाला तू क़ल्बे सलीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

**मुआफ़ी नहीं मिलेगी ?**

हज़रते अबुद्दार्दा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** से मरवी है कि तुम नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना वरना तुम पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत

कर दिया जाएगा जो तुम्हारे छोटे पर रहम नहीं करेगा और तुम्हारे नेक लोग दुआ करेंगे मगर उन की दुआएं क़बूल नहीं होंगी, वोह मुआफ़ी मांगेंगे मगर उन को मुआफ़ी नहीं मिलेगी। (احياء العلوم، 2/383)

## बुरी बातों से रोको वरना.....!

मुसलमानों के पहले खलीफा, हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله عنه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम इस आयत को पढ़ते हो :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ  
لَا يَصْرُكُمْ مَنْ صَلَّى إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

(7, المائدة: 105)

**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

(या'नी तुम इस आयत से येह समझते होगे कि जब हम खुद हिदायत पर हैं तो गुमराह की गुमराही हमारे लिये मुज़िर (या'नी नुक़सान देह) नहीं, हम को किसी गुमराह को गुमराही से मन्अ करने की ज़रूरत नहीं) मैं ने मक्की मदनी आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह फ़रमाते सुना है कि लोग अगर बुरी बात देखें और उस को न बदलें तो क़रीब है कि अल्लाह पाक उन सब को अपने अज़ाब में मुब्तला फ़रमा दे। (ابن ماجه، 4/359، حديث: 4005)

इस हदीसे पाक के तहूत “मिरआतुल मनाजीह” में है : कुरआने करीम की इस आयत :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسُكُمْ  
لَا يَصْرُكُمْ مَنْ صَلَّى إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

(7, المائدة: 105)

**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो, तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

के हवाले से बा'ज लोग समझते थे कि **أَمْرًا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيًا عَنِ الْمُنْكَرِ** (नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ करने) की ज़रूरत नहीं बल्कि आदमी को अपनी इस्लाह करनी चाहिये दूसरों के गुनाह या कोताहियां इस का कुछ बिगाड़ नहीं सकती, हज़रते अबू बक्र सिद्दीक **رَضِيَ اللهُ عَنْهُ** ने इस मुग़ालते को दूर करते हुए **رَسُولُ اللَّهِ** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के इस इशादे गिरामी के हवाले से बताया कि जब लोग बुराई को देख कर उसे बदलने की कोशिश न करें तो वोह सब अज़ाब में मुब्तला होते हैं। दूसरी रिवायात से ये बात वाजेह होती है कि इस तब्दीली का तअल्लुक ताक़त से है या'नी बुराई को बदलने वाले लोग इस बात की ताक़त रखने के बा वुजूद न बदलें तो वोह भी अज़ाब के मुस्तहक़ होंगे। (मिरआतुल मनाजीह, 6/507)

मज़क़ूरा आयते मुक़द्दसा के तहत हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : मुसलमान कुफ़ार की महरूमि पर अफ़सोस करते थे और उन्हें रन्ज होता था कि कुफ़ार इनाद (या'नी अदावत) में मुब्तला हो कर दौलते इस्लाम से महरूम रहे। **अल्लाह** पाक ने उन (मुसलमानों) की तसल्ली फ़रमा दी कि इस में तुम्हारा कुछ ज़र (या'नी नुक़सान) नहीं **أَمْرًا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيًا عَنِ الْمُنْكَرِ** (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से मन्अ करने) का फ़र्ज अदा कर के तुम बरिय्युज्जिम्मा हो चुके तुम अपनी नेकी की जज़ा पाओगे। **अब्दुल्लाह बिन मुबारक (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ)** ने फ़रमाया : इस आयत में **أَمْرًا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيًا عَنِ الْمُنْكَرِ** के वुजूब की बहुत ताकीद की है क्यूं कि अपनी फ़िक्र रखने के मा'ना येह है कि एक दूसरे की ख़बरगीरी करे, नेकियों की रग़बत दिलाए, बदियों से रोके।



अगले हफ्ते का रिसाला

